सपनों के से दिन

लेखक परिचयः गुरुदयाल सिंह

पंजाब के जैतो कस्बे में 10 जनवरी 1933 में एक साधारण से दस्तकार परिवार में गुरुदयाल सिंह का जन्म हुआ। 1954 से 1970 तक आप एक स्कूल में अध्यापक रहे। जब कॉलेज में प्राध्यापक बने, तब आपने पहला उपन्यास पढ़ा। आप यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर के पद से सेवानिवृत्त हुए।

गुरुदयाल ग्रामीण परिवेश के भाव बोध लेखक हैं। आप अपने पात्र खेतिहर मजदूरों, पिछड़े, दलित वर्ग के लोगों में से चुनते हैं।

पंजाबी भाषा में उल्लेखनीय योगदान के कारण आप को ज्ञानपीठ, साहित्य अकादमी, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपने लेखक के रूप में कई देशों की यात्रा की।

पाठ परिचय: सपनों के से दिन

बाल्यावस्था व बचपन के खेल- लेखक के साथ बचपन में खेलने वाले अधिकतर एक जैसी आर्थिक स्थिति वाले बच्चे थे। फटे कुर्ते, फटी मैली कच्छी, नंगे पाँव व बिखरे बाल वाले बच्चे जब खेलते और उन्हें चोट लग जाती, तो घर जाने पर माँ-बहनें उन पर तरस नहीं खाती, बल्कि और अधिक पिटाई करती। बुरी तरह पिटने के बाद भी अगले दिन वह फिर खेलने पहुँच जाते।

अधिकतर बच्चे एक जैसी आर्थिक स्थिति वाले थे। सभी बच्चों की आदतें एक जैसी थी। अधिकतर बच्चे स्कूल नहीं जाते थे। जो स्कूल गए भी, तो भी पढ़ाई में रुचि न होने के कारण बस्ता तालाब में फेंक देते। माता-पिता उन्हें कुछ नहीं पूछते। अधिकतर लोगों का विचार था कि पढ़ा कर बच्चे को तहसीलदार तो बनाना नहीं। थोड़ा बड़ा होने पर पंडित धन्शाम दास से हिसाब-किताब लिखना सिखा देंगे। अधिकतर बच्चे राजस्थान व हरियाणा से आए हुए थे। बच्चों को एक दूसरे की भाषा समझ नहीं आती थी, परंतु खेलते समय एक दूसरे की बातें समझ लेते थे।

लेखक का स्कूल- लेखक के स्कूल के रास्ते के दोनों ओर अलियार के झाड़ थे। स्कूल की क्यारियों में कई तरह के फूल थे, जैसे गुलाब, गेंदा, मोतिया आदि। मोतिये की कलियाँ इतनी सुंदर होती थी कि चंदू चपड़ासी से नजर बचाकर एक-दो तोड़ लेते थे। लेखक कुछ देर उसे

सूँघते, फिर क्या करते - उन्हें याद नहीं। या तो जेब में डाल लेते थे, जिसे माँ कपड़े धोते समय फेंक देती थी, या फिर बकरी के मेमने की तरह खा लेते थे।

<u>गर्मी की छुट्टियाँ</u>- स्कूल में नई कक्षा में जाने पर एक डेढ़ महीने पढ़ाई होती। उसके बाद डेढ-दो महीने की छुट्टियाँ होती। पहले दो-तीन सप्ताह खूब खेलकूद होता। माँ के साथ लेखक नानी के घर जाते। नानी खूब दही, दूध, मक्खन आदि खिलाती, खूब प्यार करती। नानी का गाँव छोटा था, पर वहाँ तालाब बड़ा था। दोपहर को तालाब पर नहाने जाते। अगर लेखक नानी के घर नहीं जाते, तो अपने गाँव के तालाब में नहाते और रेत पर खूब लोट लगाते। तालाब में कूदने और रेत में लोटपोट होने का सिलसिला कई बार चलता।

मास्टर जी ने छुट्टियों में करने के लिए काम दिया होता। जैसे-जैसे छुट्टियाँ कम होती जाती, लेखक खेलकूद आदि भूलने लगता। गणित के मास्टर जी सौ से कम सवाल नहीं देते थे। पहले लेखक सोचता कि दस सवाल हर रोज करने पर भी 15-20 दिन में सभी प्रश्न *हल* हो जाएंगे और फिर सोचता पंद्रह सवाल भी हर रोज किए जा सकते हैं। इस तरह छुट्टियाँ कम होती जाती और अब लेखक सोचने लगता कि प्रश्न हल ही नहीं करेगा, जैसे अन्य कई छात्र नहीं करते थे।

छुट्टियों का काम न करने वालों का नेता ओमा था। उस जैसा कोई नहीं था। उसका मार-पिटाई व गालियाँ देने का ढंग बिल्कुल अलग था। उसकी शक्ल सूरत भी बिल्कुल अलग थी। उसका हाँडी जितना बड़ा सिर था, कद उसका ठिगना था। ऐसे लगता था जैसे बिल्ली के बच्चे के माथे पर तरबूज रखा हो। बड़े सिर पर नारियल-की-सी आँखों वाला बंदरिया के बच्चे जैसा चेहरा और भी अजीब लगता। वह हाथ-पैर से नहीं, सिर से लड़ता। वह सिर से छाती पर तेज प्रहार करता। उसकी इस टक्कर को रेल का बम्बा कहते थे और सब बच्चे उससे डरते थे।

<u>पीटी सर और उनका डर</u>- लेखक का स्कूल छोटा सा था। स्कूल में नौ कमरे थे, जो अंग्रेजी के H अक्षर की भांति थे। प्रेयर (प्रार्थना) के समय सब बच्चे कतारों में खड़े होते। प्रीतम चंद पीटी सर लड़कों को देखते। कोई लड़का कतार में हिलता भी, तो पीटी सर बाघ की तरह उस पर झपट पड़ते और खाल खींचने की कहावत को सत्य कर देते।

स्कूल के हेडमास्टर शर्मा जी थे, जो पाँचवीं व आठवीं के बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाते थे। वे बच्चों को कभी मारते नहीं थे। गुस्से में वह जल्दी-जल्दी आँखें झपकाते या उल्टी उंगलियों से एक चपत मारते।

कभी-कभी स्कूल जाना अच्छा लगता, जब पीटी सर स्काउटिंग का अभ्यास करवाते। नीली-पीली झंडियाँ हाथ में पकड़कर वन-टू-थ्री करते, झंडियाँ ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ करते, खाकी वर्दी तथा गले में दो रंगे रुमाल पहनकर बच्चे अभ्यास करते। उस समय जब पीटी सर शाबाश

कहते, तो ऐसा लगता जैसे फौज के तमगे जीत लिए हों। पीटी सर की यह शाबाशी कॉपी में मिले गुड्डों से अच्छी लगती।

नई कक्षा में जाना- लेखक जब अगली कक्षा में जाता, तो हेडमास्टर शर्मा जी उसे पुरानी किताबें दिला देते थे। किताबें उस विद्यार्थी की होती, जिसे हेड मास्टर साहब उसके घर पर पढ़ाते थे। लेखक के घर में कोई नहीं चाहता था कि लेखक पढ़े। कॉपी, पेंसिल आदि पर पूरे साल में दो रुपये खर्च होते, वही लेखक के घर वालों के लिए बड़ा खर्च था।

लेखक को नई कक्षा में जाने पर विशेष खुशी नहीं होती। नई कॉपियों और पुरानी किताबों की खुशबू मन को उदास करती। नई कक्षा में अरुचि का ठीक कारण तो लेखक नहीं जानते थे। शायद नई कक्षा की मुश्किल पढ़ाई और मास्टरों की मारपीट का भय था, क्योंकि नई कक्षा में आते ही अध्यापक समझने लगते थे कि हम हरफनमौला हो गए हैं। यदि छात्र उनकी आशाओं पर पूरे नहीं उतरते, तो अध्यापक उनकी चमड़ी उधेड़ने को तैयार रहते।

दूसरा विश्व युद्ध- दूसरे विश्व युद्ध का समय था। नाभा रियासत के राजा को 1923 में गिरफ्तार कर लिया गया था और तमिलनाडु के कोडाएकेनाल में भेज दिया गया था। वहीं उनकी मृत्यु हो गई। राजा का पुत्र विलायत से पढ़ कर आया था, इसलिए उनकी रियासत में अंग्रेजों की चलती थी। लोगों को फौज में भर्ती करने के लिए कुछ अफसर आते। उनके साथ कुछ नौटंकी वाले भी होते थे। वे लोग फौज के सुख-आराम, बहादुरी के दृश्य दिखाकर, गाने गाकर लोगों को आकर्षित करते। कई युवक फौज में भर्ती होने के लिए तैयार हो जाते।

मास्टर प्रीतम चंद का अत्याचार- पीटी सर मास्टर प्रीतम चंद कभी मुस्कुराते नहीं थे। उनका ठिगना कद था, दुबला पतला गठीला शरीर था, माता के दागों से भरा चेहरा था तथा बाज़ के समान उनकी आँखें तेज थी। मास्टर प्रीतम खाकी वर्दी व चमड़े के चौड़े पंजे वाले जूते पहनते। जूते की एड़ी के नीचे घोड़े की नाल व जूते के पंजे पर कील लगे हुए थे। जब वे सख्त जगह पर भी खड़े होते, तो उनके जूतों के निशान पड़ जाते। उनको देखकर भय उत्पन्न होता।

जब लेखक कक्षा चार में थे, तब फारसी भाषा सिखानी शुरू की गई। मास्टर प्रीतम चंद उन्हें फारसी पढ़ाने लगे। एक बार उन्होंने बच्चों को एक शब्द रूप याद करने को दिया। शब्द रूप मुश्किल था। एक दिन में किसी को भी पूरा याद नहीं हुआ। दूसरे दिन जब वह रूप सुनने लगे, कोई भी रूप नहीं सुना पाया। उन्होंने बच्चों को मुर्गा बना दिया।

हेड मास्टर द्वारा मास्टर प्रीतम चंद को मुअत्तल (निलंबित) करना- हेड मास्टर ने जब देखा कि प्रीतम चंद कक्षा चार के छोटे बच्चों को कठोर दंड दे रहे हैं, तो उन्हें गुस्सा आ गया। उन्होंने गुस्से से कहा-ये तुम क्या कर रहे हो? कक्षा चार के विद्यार्थियों को दंड देने का यह क्या तरीका

है? इसे अभी बंद करो। इसके साथ ही उन्होंने मास्टर प्रीतम को मुअत्तल कर दिया और इसकी सूचना शिक्षा विभाग नाभा के डायरेक्टर को भी दे दी।

कई सप्ताह तक मास्टर प्रीतम स्कूल नहीं आए, पर अपने घर पर वे अपने तोतों के साथ खुश थे। उन्हें मुअत्तल होने की कोई चिंता नहीं थी।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1) **"**कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती"- पाठ के किस अंश से यह सिद्ध होता है?

उत्तर: भाषा भाव अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। पर आपसी व्यवहार के लिए भाषा महत्त्वपूर्ण है, ऐसा आवश्यक नहीं है। हमारे भावों की अभिव्यक्ति के लिए अनेक साधन हैं। हँसना, रोना, खेलना आदि के लिए किसी भाषा की आवश्यकता नहीं होती।

"सपनों के से दिन" पाठ में लेखक बताते हैं - लेखक जहाँ रहते थे, वहाँ आधे से अधिक परिवार राजस्थान, हरियाणा आदि से व्यापार या दुकानदारी करने आए थे। बच्चों को एक दूसरे की बोली नहीं आती थी। यहाँ तक कि लेखक को उनके कुछ शब्द सुनकर हँसी आती थी। परंतु जब वो खेलते थे, तो उन्हें एक दूसरे की बात खूब समझ आती। भाषा उस समय बाधा नहीं बनती।

प्रश्न 2) पीटी साहब की शाबाश फ़ौज के तमगों-सी क्यों लगती थी? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: पीटी साहब बहुत अनुशासन प्रिय थे। प्रेयर (प्रार्थना) की पंक्ति में कोई विद्यार्थी ठीक से खड़ा नहीं होता, तो पीटी सर 'खाल खींच लेना' मुहावरे को चरितार्थ कर देते।

जब बच्चे स्काउट की खाकी वर्दी पहनकर तथा गले में दो रंगे रुमाल लटकाकर, नीली-पीली झंडियाँ पकड़कर अभ्यास करते और विद्यार्थियों का अच्छा प्रदर्शन देखकर पीटी सर शाबाश कहते, तब उनकी एक शाबाश उन्हें ऐसी लगती, जैसे उन्होंने फ़ौज के तमगे जीत लिए हों। क्योंकि पीटी सर का व्यवहार कठोर था, वे अधिकतर खुश नहीं होते थे। इसीलिए उनकी एक शाबाश उन्हें फ़ौज के तमगों जैसी लगती।

प्रश्न 3) नई श्रेणी में जाने और नई कॉपियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखक का बालमन क्यों उदास हो उठता था?

उत्तर: नई श्रेणी में जाने और नई कॉपियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखक का बालमन उदास हो जाता था। उसका कारण था - नई श्रेणी की मुश्किल पढ़ाई और नए मास्टरों की मार पिटाई का डर। नई श्रेणी में आने वाले छात्रों के विषय में अध्यापक सोचने लगते कि वे हरफन मौला हो गए हैं। छात्र जब अध्यापक की उम्मीद पर खरे नहीं उतरते, तो अध्यापक उनकी चमड़ी उधेड़ देने के लिए तैयार रहते। इसलिए केवल कॉपी किताबों की गंध ही नहीं, स्कूल के गेट से कमरों तक लगे अलियार के झाड़ की गंध से भी लेखक का मन उदास हो जाता था।

प्रश्न 4) स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्त्वपूर्ण 'आदमी', फौजी जवान क्यों समझने लगता था?

उत्तर- मास्टर प्रीतम चंद जब स्काउटों को परेड करवाते, तो लेफ्ट-राइट की आवाज या मुँह में ली सीटी से मार्च कराया करते। उनके राइट टर्न, लेफ्ट टर्न, अबाउट टर्न कहने पर बच्चे छोटे-छोटे बूटों की एड़ियों पर दाएँ-बाएँ या एकदम पीछे मुड़कर बूटों की टक-टक करते व अकड़ कर चलते, उस समय लेखक को लगता कि वो विद्यार्थी नहीं, कोई बहुत महत्त्वपूर्ण आदमी हो, फौजी जवान हो।

प्रश्न 5) हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया?

उत्तर- पीटी साहब को कक्षा चार के बच्चों को फारसी पढ़ाने के लिए कहा गया। उन्होंने बच्चों को एक शब्द रूप याद करने के लिए कहा। शब्द रूप मुश्किल था, अतः कोई भी विद्यार्थी याद नहीं कर पाया और पीटी साहब ने सबको मुर्गा बना दिया। इससे कई विद्यार्थी गिर भी पड़े। हेड मास्टर शर्मा जी ने जब देखा, तो उन्हें गुस्सा आ गया। उन्होंने पीटी साहब को मुअत्तल कर दिया और शिक्षा विभाग के डायरेक्टर से मंजूरी के लिए पत्र नाभा भेज दिया।

प्रश्न 6) लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों स्कूल जाना अच्छा लगने लगा?

उत्तर- लेखक के अनुसार लेखक के लिए स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह नहीं थी। कक्षा चार में भी 5-7 लड़कों को छोड़कर बाकी सब रोते-चिल्लाते स्कूल जाया करते। कभी-कभी स्कूल अच्छा लगता, जब बच्चे खाकी वर्दी पहन कर व गले में दो रंगा रुमाल लटकाकर, नीली-पीली झंडी हाथ में पकड़ कर परेड करते तथा पीटी सर शाबाश कहते, तब स्कूल जाना अच्छा लगता।

प्रश्न 7) लेखक अपने जीवन में स्कूल में छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाया करता था और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किस की भांति बहादुर बनने की कल्पना किया करता था?

उत्तर- लेखक के स्कूल में गर्मियों की छुट्टियाँ लगभग डेढ-दो महीने की होती। शुरू में लेखक खेलकूद में अपना समय बिताता। जैसे-जैसे छुट्टियाँ कम होती जाती, वैसे-वैसे उसका डर बढ़ता जाता, क्योंकि मास्टर छुट्टियों के लिए बहुत काम देते थे। गणित के अध्यापक दो सौ से कम सवाल नहीं देते थे। जब छुट्टियों का एक महीना होता, तो लेखक सोचता कि दस सवाल हर रोज करने पर भी बीस दिन में सारे सवाल हल हो जाएँगे। इस तरह दस दिन और बीत जाते। अब लेखक सोचने लगता-पंद्रह सवाल हर रोज भी किए जा सकते हैं। जैसे-जैसे छुट्टियाँ कम होती जाती, वैसे-वैसे लेखक का डर बढ़ता जाता। अब वो सोचने लगता कि वह अपने अन्य साथियों की तरह काम ही नहीं करेगा, मास्टर जी से मार खा लेगा।

छुट्टियों का काम न करने वाले बच्चों का नेता ओमा होता था और लेखक ओमा की तरह बहादुर बनने की कल्पना करता।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 8) पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- पीटी सर लेखक के स्कूल के पीटी के अध्यापक थे। उनका नाम प्रीतम चंद था। उनका कद छोटा था तथा शरीर गठीला था। उनके चेहरे पर चेचक के दाग थे। पाठ के आधार पर उनके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ सामने आती हैं:-

1. **अनुशासन प्रिय:** पीटी सर प्रीतम चंद बहुत अनुशासन प्रिय थे। प्रार्थना की पंक्ति में जब विद्यार्थी खड़े होते और अगर कोई पंक्ति खराब कर देता या हिल जाता, इसे वह अनुशासन भंग करना मानते और कठोर दंड देते।
2. **अधिक कठोर:** पीटी सर अत्यधिक कठोर स्वभाव के थे। कक्षा चार के विद्यार्थियों को जब वे फारसी का शब्द रूप याद करने को देते हैं और विद्यार्थी रूप याद नहीं कर पाते, तो वह छोटे बच्चों को कठोर दंड देते हैं, उन्हें मुर्गा बना देते हैं।
3. **अयोग्य अध्यापक:** पीटी सर एक अयोग्य अध्यापक थे। उन्हें पता ही नहीं था कि कक्षा चार के विद्यार्थियों को फारसी कैसे पढ़ानी है। इसीलिए उन्हें फारसी पढ़ाते एक सप्ताह ही हुआ था और उन्होंने बच्चों को कठिन शब्द रूप याद करने के लिए दिया और याद न कर पाने पर बच्चों को कठोर दंड दिया।
4. **भावुक**: पीटी सर बहुत भावुक थे, इसीलिए अपने चौबारे पर उन्होंने एक तोता पाल रखा था। वे उसे प्यार से बादाम भिगोकर खिलाते।
5. **स्वाभिमानी**: वे बहुत स्वाभिमानी थे। हेडमास्टर साहब जब उन्हें मुअत्तल कर देते हैं, वे उनसे माफी नहीं माँगते, बल्कि अपने घर पर रहते हैं।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 9) विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों व वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर- "सपनों के से दिन" पाठ में लेखक बताते हैं कि विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए अध्यापक शारीरिक दंड देते थे। कई बार 'चमड़ी उधेड़ देने' जैसी कहावत को सत्य कर देते थे। पढ़ाई के नाम पर उन्हें खूब काम दिया जाता था। काम पूरा न होने की स्थिति में कठोर दंड दिया जाता था। जैसे पीटी सर ने फारसी के शब्द रूप याद न करने की स्थिति में सब विद्यार्थियों को मुर्गा बना दिया।

आज परिस्थितियाँ बदल गई हैं। आज विद्यार्थियों को शारीरिक दंड देने की मनाही है। विद्यार्थी किस कारण से अनुशासनहीन हो रहा है, इस बात की खोज की जाती है तथा विद्यार्थी में वैचारिक परिवर्तन करने की कोशिश की जाती है। विद्यार्थी की गतिविधियों की जानकारी उसके माता पिता को दी जाती है। वर्तमान में अपनाई जाने वाली युक्तियाँ अधिक प्रासंगिक और उचित हैं।

प्रश्न 10) प्राय: अभिभावक बच्चों को खेलकूद में ज्यादा रुचि लेने पर रोकते हैं और समय बर्बाद न करने की नसीहत देते हैं। बताइए:-

क. खेल आपके लिए क्यों जरूरी है?

ख. आप कौनसे ऐसे नियम-कायदों को अपनाएँगे, जिससे अभिभावकों को आप के खेल पर आपत्ति न हो?

उत्तर: अधिकतर अभिभावक समझते हैं कि खेलकूद से पढ़ाई में बाधा उत्पन्न होती है। जीवन में सफल होने के लिए एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए पढ़ाई काम आती है, खेलकूद नहीं।

क. वास्तविकता यह है कि पढ़ाई जितनी आवश्यक है, खेलकूद भी उतना ही आवश्यक है। पढ़ाई से व्यक्ति का बौद्धिक विकास होता है, तो खेलकूद से विद्यार्थियों में सहनशीलता बढ़ती है, सहयोग की भावना आती है तथा नेतृत्व करना आता है। विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी आवश्यक है।

ख. अभिभावकों को खेलकूद में कोई आपत्ति न हो, उसके लिए हम कुछ बातों का ध्यान रखेंगे। अपनी समय सारणी बनाएँगे, जिसमें खेलकूद व पढ़ाई दोनों के लिए स्थान होगा। हम समय सारणी का ठीक से पालन करेंगे, ताकि खेलकूद के कारण पढ़ाई का किसी भी प्रकार का नुकसान न हो।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 11) प्राचीन और आधुनिक शिक्षा प्रणाली को पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: प्राचीन शिक्षा प्रणाली: प्राचीन शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों के अभिभावक शिक्षा को जरूरी नहीं समझते थे, परंतु जो विद्यार्थी स्कूल जाते भी थे, वे पूरी तरह से शिक्षकों पर निर्भर रहते थे । शिक्षकों का विद्यार्थियों के प्रति व्यवहार अत्यधिक कठोर था। बात-बात पर विद्यार्थियों को तरह-तरह से दंड दिया जाता था।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली: आधुनिक शिक्षा प्रणाली में आज शिक्षा बच्चों के लिए अनिवार्य है। बच्चों की शिक्षा पर अध्यापक और माता-पिता दोनों ध्यान देते हैं। बच्चों को शारीरिक दंड नहीं दिया जाता, बल्कि बच्चे की मानसिकता बदली जाती है। किसी भी छात्र पर आज टीका-टिप्पणी नहीं की जाती, बल्कि उसे प्रोत्साहित किया जाता है।

प्रश्न 12) "सपनों के से दिन"पाठ में हेडमास्टर शर्मा जी की बच्चों को मारने-पीटने वाले अध्यापकों के प्रति क्या धारणा थी? जीवन मूल्यों के संदर्भ में उसके औचित्य पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: पाठ में हेड मास्टर शर्मा जी बच्चों को मारने-पीटने के पक्ष में नहीं थे। वे स्वयं गुस्सा होने पर जल्दी-जल्दी आँखें झपकाते, अधिक से अधिक अपने हाथ की उल्टी उंगलियों से बच्चों के गाल पर चपत लगाते। जब पीटी सर प्रीतम चंद फारसी के शब्द रूप याद न करने पर कक्षा चार के बच्चों को मुर्गा बनाने जैसा कठोर दंड देते हैं, तो वे क्रोधित होकर पीटी सर को न केवल डाँटते हैं, बल्कि उन्हें उनके पद से मुअत्तल भी कर देते हैं।

हेड मास्टर शर्मा जी ने पीटी सर को मुअत्तल कर दिया, ठीक ही किया। बच्चे स्कूल में दंड पाने नहीं आते, बल्कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए आते हैं। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बच्चे की छिपी प्रतिभा को समझने के लिए उनके साथ प्रेम पूर्वक व्यवहार करने की आवश्यकता होती है। बाल मनोविज्ञान भी कहता है कि डाँट-फटकार से बच्चे डर जाते हैं। जो कुछ उन्हें आता भी है, वह भी वे अभिव्यक्त नहीं कर सकते।

प्रश्न 13) लेखक को किसके सहारे अपनी पढ़ाई जारी रखनी पड़ी? आप गरीब बच्चों की पढ़ाई जारी रखने के लिए विद्यालयों को क्या सुझाव देना चाहेंगे?

उत्तर: लेखक के घर की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। उसकी पढ़ाई को जारी रखने के लिए हेड मास्टर शर्मा जी एक अमीर घर के बच्चे की पुरानी किताबें लाकर देते। कापियाँ, पेंसिल आदि का खर्चा लेखक के घर वाले उठाते। यह खर्चा भी उनके लिए भारी था।

गरीब बच्चों की पढ़ाई को जारी रखने के लिए हम विद्यालयों को सुझाव देंगे कि विद्यालय की तरफ से गरीब बच्चों को छात्रवृत्ति दी जाए और उनकी फीस माफ़ कर दी जाए। विद्यार्थियों को हम सुझाव देंगे कि वे नई कक्षा में जाने पर अपनी पिछली कक्षा की पुस्तकें पुस्तकालय को दे दें, जिससे गरीब विद्यार्थी उन्हें लेकर अपनी पढ़ाई जारी रख सकें। सरकार की तरफ से गरीब विद्यार्थियों को भोजन, कपड़े आदि भी दिए जा सकते हैं एवं छात्रावास की सुविधा उपलब्ध कराई जा सकती है। इस प्रकार गरीब विद्यार्थियों की पढ़ाई जारी रखी जा सकती है।

*****

VASUNDHARAHINDI.COM